दीवाली के पटाखे

साहित्य सहकार प्रकाशन

बच्चों के नाटक

दीवाली के पटाखे

रेखा जैन

प्रथम संस्करण 1977

प्रकाशक
साहित्य सहकार
सी 38 ईस्ट कृष्णनगर, दिल्ली 110051

मुद्रक साधना प्रिंटर्स, दिल्ली 32

मूल्य चार रुपये

रेखा जैन जन्म 1924 मे आगरा मे हुआ। बी० ए० तक सामान्य शिक्षा के अलावा शास्त्रीय सगीत और नृत्य का विशेष प्रशिक्षण। 1944 से 1947 तक बबई मे जन-नाट्य सघ के केन्द्रीय नत्य नाटय दल की प्रमुख सदस्या रही और शातिवधन द्वारा रचित नृत्य नाटयो म देश के विभिन्न भागो म प्रदशन किया। 1947 से 1955 तक इलाहाबाद म नाटको और नत्य-नाटयो मे अभिनय तथा निर्देशन किया। लोक गीतो म विशेप रुचि, जिनके कई कायक्रम इलाहाबाद और दिल्ली मे राष्ट्रीय महत्व के अवसरो पर प्रस्तुत किये। 1956 से दिल्ली के 'चिल्ड्रे स लिटिल थिएटर' म नत्य रचनाकार और निर्देशक हैं। 1957 मे एशियन थिएटर मस्थान' मे यूनेस्को के विशेषज्ञो से वाल रगमच का विशेप प्रशिक्षण प्राप्त किया। अनेक बाल-नाटको और ध्वनि रूपको की रचना की है और शास्त्रीय तथा लोक-नृत्य, सगीत आदि विषयो पर लेख पत्र पत्रिकाओ म प्रकाशित हुए हैं। प्रकाशित रचनाए 'सगीत की कहानी', 'हमारे लोक-नत्य, खेल खिलौनो का ससार' (बाल नाटक) तथा 'दीवाली के पटाखे (बाल नाटक)।

स्नेहमयी चाची

और दिवगत चाचाजी को,

जिनके प्यार दुलार मे

खेले गये खेल

बाद मे नाटक बन गये—

भूमिका

जब मैं बच्चो के बीच होती हू तो वे मुझे खिले हुए रग बिरग फूलो की तरह जान पडते हैं, और मुझे लगता है कि उनको यदि ठीक से सँवारा सँजोया जाए तो उनकी प्रतिभा की सुगध से देश का भविष्य भर उठेगा। इसीलिए यह बात बार बार मन मे आती है कि इनकी प्रतिभा के विकास के लिए क्या साधन अपनाए जायें। विशेषज्ञ इस निष्कर्ष पर पहुँचे है कि पढाई के अतिरिक्त बच्चो को कुछ ऐसी सृजनात्मक गतिविधिया के लिए सुविधाएँ देनी चाहिए जिनके द्वारा उनका मनोरजन भी होता रहे और उनको अपनी भावना की अभिव्यक्ति, अपनी कल्पना शक्ति के प्रयोग का अवसर भी मिले।

नाटक एक ऐसा ही माध्यम है जो बच्चो को बहुत अच्छा लगता है और जिसमे वे पूरी तरह से खो जाते हैं। इसका एक कारण यह है कि उन्ह किसी की नकल करने म बहुत मजा आता है। यह नकल उनकी अपनी मन पसद की कहानी पर हो तो उन्ह करने और देखन दोनो मे ही बहुत अच्छा लगता है।

प्रस्तुत पुस्तक मे बच्चो के खेलो तथा मन पसद कहानियो पर आधारित तीन छोटे नाटक है। ये नाटक लिखने के उद्देश्य से नहीं, वरन खेलते खेलते लिखे गय, इसीलिए इनमे बीच-बीच मे शब्दो के अतिरिक्त सगीत और पद्य का मिश्रण भी है। इससे यह लाभ होता है कि बच्चे को अपनी रुचि और प्रतिभा के अनुसार उसमे भाग लेने का मौका मिल जाता है। वैसे भी देखा गया है कि छोटे बच्चे सगीत भरे नाटक मे अधिक डूब जाते हैं उन्ह लय के साथ पूरी तरह उछलने-कूदने का मौका मिलत ही उनके चेहरे खुशी से खिल उठते हैं।

जैसा मैंने ऊपर कहा, इस पुस्तक के नाटक बच्चो के साथ अभ्यास करते-करत लिखे गय। जिन बच्चो के साथ मैंने ये नाटक कराये है वे इन्हे करन के लिए सदा बहुत उत्सुक रहते थे और नय नये विचार सुझात

थे। इस कारण इनमे बच्चो के अपने खेलो या उनकी रुचि की कथाओ का अधिक उपयोग है। जाहिर है, पटाखा के कारण बच्चे दीवाली का बडी उत्सुकता से इतजार करते हैं। 'थप्प रोटी थप्प दाल' का खेल हमने अपने बचपन मे सैकडो बार ही खेला होगा और हर बार बिल्ली को पकडने मे बडा आनद आता था। मुझे वही याद था और उसी के आधार पर नाटकीय रूप तैयार हुआ जो करनेवाले बच्चो का भी बहुत भाया। 'पूपू परिया के देश म' रवीन्द्रनाथ टैगोर की एक कहानी पर आधारित हैं। इनम भी बच्चा की कुछ बडी ही सहज प्रवत्तियों आकाक्षाओ और खेला का सहारा लिया गया है। हम सब जानते हैं कि एक लाठी को घोडा बनाकर उसे दौडाते हुए तरह-तरह के साहसिक करतब करना बच्चा का बडा प्रिय खेल है।

मुझे पूरी आशा है कि बच्चो के रगमच मे काम करनेवाले दूसरे सहयोगियो को भी ये नाटक उपयोगी जान पडेगे। इनके द्वारा बच्चो के रगमच को अधिक आकषक और व्यापक बनाने मे कुछ भी सहायता मिली तो मुझे बहुत खुशी होगी।

मैं दिल्ली चिल्ड्रेस थिएटर की आभारी हूँ जहाँ मुझे ये नाटक करने और लिखने का मौका मिला।

—रेखा जैन

थप्प रोटी थप्प दाल

पात्र

मुनी	नीना	सरला
तरला	चुन्नू	टिनकू
अन्य बच्चे	बिल्ली	
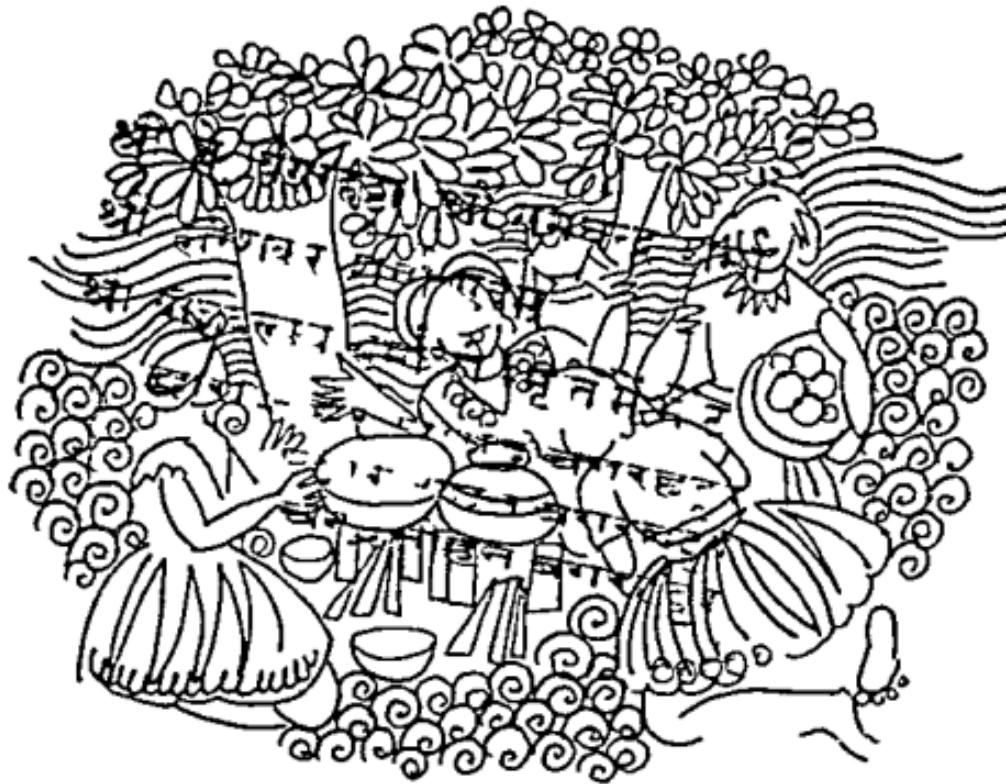
थप्प रोटी थप्प दाल

[परदा खुलने पर बच्चे 'मगर तेरी धारा मे डुब्बक डुब्बा' खेल खेलते दिखाई पडते है। एक बच्चा मगर बना है जो अन्य बच्चो को पकडने दौडता है। बाकी बच्चे एक काल्पनिक तालाब के किनारे से पानी मे आते है, नहाने का अभिनय करते हुए गाते जाते है

मगर तेरी धारा मे डुब्बक डुब्बा।
मगर तेरी धारा मे डुब्बक डुब्बा।

मगर बच्चो को पकडने के प्रयत्न मे इधर से उधर दौडता है। जब कोई बच्चा उसके हाथ से छू जाता है, तो वही मगर बन जाता है, और खेल पहले की भाँति ही जारी रहता है। सब बच्चे हल्ला मचाते, हँसते हुए बडे उत्साह के साथ खेल ही रहे होते है कि मुन्नी अपने घर से भागी-भागी वहाँ आती है और नीना को पुकारती है। नीना खेल छोडकर सामने एक किनारे आ जाती है, खेल चलता रहता है।]

मुन्नी (पुकारकर) ओ नीना, नीना, सुन !

नीना (पास आते हुए) क्यो, क्या वात है, मुन्नी ?

[एक ओर जरा धीमी आवाज मे, ताकि खेल का छन्द सुनाई पडता रहे ।]

मुन्नी देख नीना, आज मैंने अम्मा से आटा, घी, दाल, दही, साग, चीनी, मक्खन सब चीजे ली है । चल, रोटी का खेल खेलेगे !

नीना रोटी वनाने का ?

मुन्नी हाँ-हाँ ।

नीना हाँ, खूब मजा आयेगा । चलो, उन लोगो को भी वुला ले । (ताली वजाकर) अरे चुन्नू, तरला सुनो, अव इस खेल को खेलते तो वहुत देर हो गई । चलो, अव रोटी का खेल खेले ।

सव हाँ-हाँ, यह ठीक है ।

चुन्नू देख री नीना, अच्छी-सी रोटी वनाकर खिलाना, नही तो तेरी चुटिया पकडकर खीच लूँगा ।

नीना अरे, जा। ऐसे कहेगा तो तुझे कुछ भी नही देगे।

चुन्नू मत दीजो, तेरे जैसी तो हम खुद बना लेगे।

नीना बनाई ! साग तक तो काट नही सकता।

मुन्नी अच्छा-अच्छा, चलो देख चुन्नू, तू और टिनकू बाजार से साग-सब्जी लाने का खेल करना।

नीना नही मुन्नी, इन दोनो से जरा दाल बनवायेगे, और जब इनसे आग तक नही जलेगी तो बडा मजा आयेगा।

चुन्नू तो क्या तू समझती है हम आग नही जला सकते ? चल रे टिनकू, आज इन्हे दाल बनाकर ही दिखा देंगे। क्यो ?

टिनकू हाँ-हाँ, यार, देख लेंगे।

मुन्नी तो सरला, तू क्या करेगी ?

सरला मैं तो, भई, तेरे दही का मठा चला दूंगी।

मुन्नी और तरला, तू ?

तरला मै ? मै तेरे सग रोटी बनाऊँगी।

नीना देख तरला, रोटी तो मैं बनाऊँगी।

मुन्नी (थोडा भल्लाकर) फिर सभी रोटी बनायेंगे तो बिल्ली कौन बनेगा ? नीना, तू ही बिल्ली बन जाना ।

नीना (चिढाते हुए) तू बिल्ली बन जाना ! वाह जी वाह, मै बिल्ली बहुत बनी ! अच्छा चलो, पुगन की पुगाई करके देख लो । जो चोर बनेगा उसको ही बिल्ली बनना पडेगा ।

टिनकू हाँ, यह ठीक है ।

तरला और रोटी खानेवाला कौन होगा ?

चुन्नू इसकी क्यो चिंता करती है, हम दो-दो तो ह । और अपने दोस्तो को बुला लूंगा ।

मुन्नी चुन्नू, तेरी बडी जीभ ललचा रही है खाने को ।

नीना वस-वस, अव चलो, विल्ली कौन बनेगा यह देख ले ।

[सब बच्चे घेरा वनाकर खडे हो जाते है और मुन्नी हर बच्चे के ऊपर हाथ रख कर कहती जाती हे

अक्कड वक्कड वम्वे वो,
अस्सी न-वे पूरे सौ,
सौ मे लगा धागा,
चोर निकल के भागा ।

आखिरी शव्द के साथ हाथ नीना के ऊपर जाता है ।]

चुन्नू (चिढाते हुए) ले नीना, तू वहुत वच रही थी ! ले, वन गई न विल्ली ?

नीना (खिसियाते हुए) तो क्या हुआ, मुझे तो और भी मजा, मैं तुम्हारी सारी चीजें खा जाऊँगी ।

मुन्नी नीना, तू वहुत झगडती है । जा, तू छिप जा, अव खेल शुरू करते

है। पर एक बात है। इस खेल मे और बच्चो की जरूरत पडेगी।

चुन्नू इसमे क्या है ? मै अपने दोस्तो को बुला लूंगा, तू अपनी सहेलियो को बुला ले।

मुन्नी हॉ, यह ठीक है। हाँ भई, सब अपनी-अपनी जगह भाग जाओ। एक-दो-तीन –

[खेल शुरु होने से पहले सगीत-स्वर। फिर सगीत-स्वर क्रमश कम होता जाता हे और मठा चलाने की हाँडी लेकर अभिनय के साथ दो बच्चियाँ लयबद्ध कदम रहती हुई रगमच पर आती है। फिर गगरी उतारने का और रई से मठा चलाने का अभिनय करती है। साथ ही निम्नलिखित गीत गाती हे।]

सरला-तरला घुम्मड घुम्मड दही विलोवे,
जाटनी का छोरा रोवे।
रोता है तो रोने दे,

माँ को दही विलोने दे।

[इन पक्तियो को गाते समय जाटनी के बेटे के रूप मे एक बच्चा रोता हुआ जाटनी के पास आता है। वे उसे मक्खन देने का अभिनय करती ह और प्यार से पास मे बिठाकर फिर मठा चलाने लगती ह। मुन्नी दौडकर आती है। मठा देखने का अभिनय करती है।]

मुन्नी वाह वा, खूब चलाया मट्ठा,
देखूं यह मीठा या खट्ठा!

सरला क्या देखोगी!
इस मट्ठे का बढिया स्वाद,
खाकर सब करते हैं याद।

मुन्नी (मस्कुराकर) अच्छा! बडी शान है!

[चुन्नू, टिनकू कधे पर बोझ रखकर लयबद्ध पैर रखते हुए आते है।]

तरला यह लो, चुन्नू-टिनकू आये,
देखें क्या तरकारी लाये ।

चुन्नू (बोझ उतारते हुए) ओ हो,
पीठ रही है दूख ।

टिनकू मुझको लगी करारी भूख ।

मुन्नी (मुँह मटकाते हुए) बच्चू जी,
भूख लगने से क्या होगा ?
अब पहले तुम आग जलाओ,
और हाँडी मे दाल पकाओ ।

चुन्नू अरे हाँ !
चल जल्दी से दाल पकाये ।
बड़ियो का भी स्वाद चखाये ।
[दोनो आग जलाने का, फूंक मारने, धुएँ से आये आँसू पोछने का अभिनय करते है । फिर दाल और बडी पकाते है । कलछी से दाल चलाकर चखते है कि अँगुली जल जाती है । बच्चो के दाल पकाने के अभिनय से प्रकट होना चाहिए कि ये अनाडी हे । अँगुली जलने के अभिनय के साथ-साथ

मुन्नी पास आकर इन्हे देखती है।]

मुन्नी टिनकू ने पकाई बडियाँ,
चुन्नू ने पकाई दाल,
टिनकू की बडियाँ जल गयी,
चुन्नू का बुरा हाल।
[तरला तथा अन्य सहेलियाँ एक ओर से आती है। हाथ कमर पर इस प्रकार रखा है जैसे हाथ मे डलिया हो। आकर बैठ जाती है। फिर गाकर रोटी पकाने का अभिनय करती है।]
थप्प रोटी थप्प दाल,
खाने वाले हो तैयार।
[ये पक्तियाँ दो बार गायी जाने के बाद चुन्नू और टिनकू के दोस्त एक पक्ति मे एक के पीछे एक कदम बढाते हुए बडी शान के साथ आकर एक ओर बैठ जाते है। फिर लडकियो की ओर हाथ फैला कर मांगते हुए गाकर दो

वार कहते हे ।]

चुन्नू आदि लाओ रोटी लाओ दाल,
लाओ खूब उडाये माल ।
[मुन्नी और तरला की सहेलियाँ रोटी की डलिया उठाने का अभिनय करती हुई एक पक्ति मे लडको के पास आकर उन्हे रोटी देने के अदाज मे दो बार गाकर कहती हे ।]

मुन्नी आदि ले लो रोटी ले लो दाल,
चख कर हमे बताओ हाल ।
[इसके वाद वे वापिस लौट जाती हे, अपने पहले स्थान पर आकर बैठ जाती है ।]

चुन्नू आदि (चिढाकर) खट्टा—(पर जैसे ही मुन्नी गुस्से से उसकी ओर देखती है तो कहते हे)
नही, नही, मीठा । खट्टा—नही नही, मीठा ।
(खाने का अभिनय करते हुए) खट्टा, मीठा, खट्टा, मीठा, खट्टा

मीठा, खट्टा, मीठा ।

(कुछ रुककर)

सब बच्चे आधी खाये आधी रक्खे,

अब सो जायें उठकर चक्खे ।

[सब बच्चे सो जाते हैं । और पृष्ठभूमि से संगीत बजता है । धीरे-धीरे संगीत की ध्वनि कम होने के साथ-साथ बिल्ली की म्याऊँ सुनाई पड़ती है । बिल्ली का प्रवेश । वह चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर जब देखती है तो ओठों पर जीभ को फेर कर बड़ी खुश होकर कहती है ।]

बिल्ली ओ हो ! मक्खन कितना सारा

झट से चटकर करूँ किनारा ।

(आगे बढ़कर ऊपर उछलती है, छीके पर से कुछ चीज लेने का अभिनय करती है ।)

है छींके पर यह क्या रक्खा,

बात रही क्या, अगर न चक्खा ।

(हाथ बढाकर रोटी निकालते हुए)
रोटी कैसी गरम गरम है,
घी से चुपडी नरम नरम है।
(खाते हुए)
मक्खन-रोटी चावल-दाल,
जी भर खाया कित्ता माल।
और देखो वह,
मुन्नी, चुन्नू, टिनकू सारे,
खुर्राटे भर रहे बिचारे।
अब चुपके से सरपट जाऊँ।
आलसियो को सबक सिखाऊँ।
म्याऊँ, म्याऊँ, म्याऊँ, म्याऊँ।
[बिल्ली जाती है। अँगडाई लेकर सरला उठती है और मक्खन के बर्तन को खाली देखकर आश्चर्य से चिल्लाती हुई कहती है।]

सरला ओ रे चुन्नू, टिनकू भाई
कही न मक्खन और मलाई।

मुन्नी (चोक कर उठते हुए)
अरे, जरा छींके तक जाना,
और रोटी का पता लगाना।

हाय रे,
ना रोटी ना दूध मलाई,
लगता है बिल्ली ने खाई ।

तरला हूँ ऊँ

जाटनी का बेटा बिल्ली आई आधी रात,
खा गई रोटी खा गई भात ।

एक बच्चा क्या कहा !
बिल्ली आई आधी रात,
खा गई रोटी, खा गई भात ?

टिनकू चलो चलें बिल्ली की ढूढ मचाये
फिर उसको चोरी का मजा चखाये।

सब बच्चे ठीक, ठीक !
[बच्चे मिलकर बिल्ली को ढूढने चलते है । साथ-साथ सगीत बजता है ।]

चुन्नू (आवाज देकर) अरी ऐ,
कहाँ छिपी बैठी ओ बिल्ली ?

मुन्नी वा भई वा,
तुम हो पूरे शेख चिल्ली ।

चुन्नू क्यो जी क्यो ?

मुन्नी और नहो तो क्या ?

बिल्ली क्या खुद ही बोलेगी ?
खुद अपना रहस्य खोलेगी ?

टिनकू — अच्छा चलो, वहाँ भी देखें।
[फिर सब बच्चे इधर-उधर ढूँढते है। कुछ बच्चे अदर जाते है, बाहर आते हे। कुछ रगमच पर सामने की ओर देखते ह, कभी बैठकर नीचे झुक कर देखते ह, कभी विंग की ओर देखते हे और नही मिलने का हाव-भाव प्रकट करते जाते ह। तभी तरला-सरला चीखकर कहती है।]

तरला सरला — यह लो,
मिल गई बिल्ली, मिल गया चोर।

चुन्नू-टिनकू — सच, सच, सच !
[बिल्ली घबराई हुई-सी रगमच पर आ जाती हे। सब उसे पकडते है।]

सब — करो पिटाई इसकी जोर।
(हँसकर मारने का अभिनय करते हुए)

वोल, अब खायेगी मेरी रोटी
अब खायेगी मेरी दाल ?

बिल्ली हाँ, खाऊँगी सौ-सौ बार
जो सोओगे टाँग पसार।

[यह कहकर बिल्ली भागने का प्रयत्न करती है। पर सब बच्चे उसे घेर लेते हैं। तीन-चार बार ऐसा करने के वाद बिल्ली घेरा छोड़कर भाग जाती है, और सारे बच्चे पकड़ो-पकड़ो का शोर मचाते हुए उसके पीछे-पीछे भागते हैं।]

पर्दा गिरता है।

नोट यदि अधिक बच्चे हो तो, धान कूटने, चक्की पीसने आदि के छन्द और जोड़े जा सकते हैं। शुरू के खेल के लिए एक-दो मुख्य बच्चो को छोड़कर अन्य बच्चे लिये जा सकते है और वाद मे रगमच पर अभिनय करने वाले दूसरे बच्चो को पहले से सजा कर रख सकते हैं।
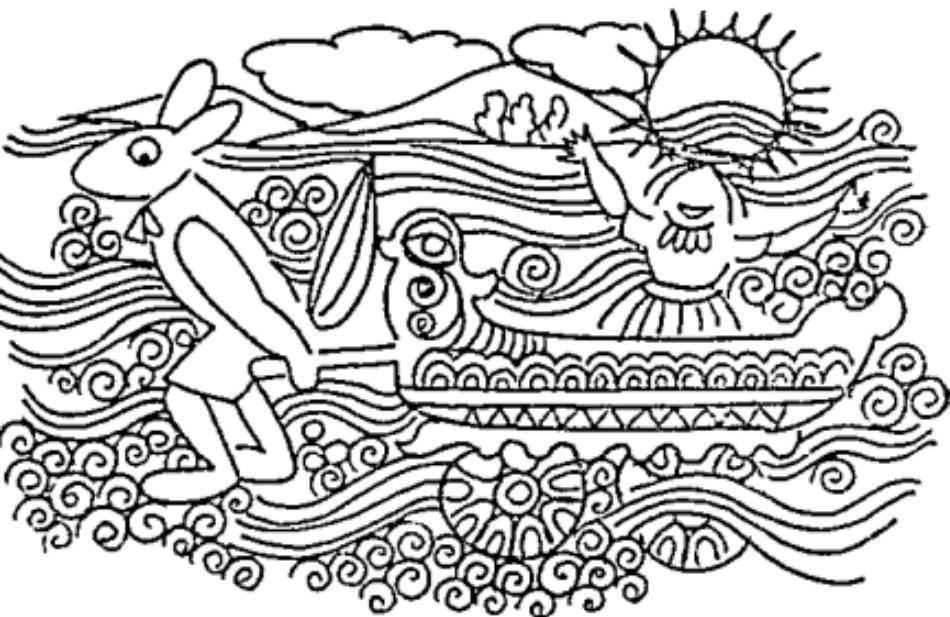
पूपू परियो के देश मे

पात्र

पूपू	दादा	सुकुमार
दो खरगोश	मेढक	घटाकण
परीरानी	अन्य परिया	प्रहरी

पूपू परियो के देश मे

[घर के आँगन मे एक ओर दादा के बैठने का तख्त बिछा है। बीच मे तुलसी का गमला है। सध्या समय है, दादा तुलसी की आरती कर रहे ह। सध्या सगीत–घटे, शख की ध्वनि के साथ आरती-गायन। आरती-गायन की ध्वनि धीरे-धीरे कम होती जाती है, दादा एक श्लोक पढकर चारो ओर पानी के छीटे फेकते है। फिर सुकुमार की ओर आरती बढाते ह।]

दादा ले भैया सुकुमार, आरती ले। (इधर-उधर देखकर) और पूपू कहाँ गई ?

पूपू यह रही दादा।

दादा क्यो, आरती नही लेगी ?

पूपू (रूठते हुए) ऊँ हूँ, मै नही लूगी, कभी नही लूंगी।

दादा क्यो नही लेगी, बिटिया।

पूपू दादा तुमने कहा था न, झूठे लोग पापी होते है।

दादा सो तो होते हैं।

पूपू तुम झूठ बोलते हो इसलिए तुम भी पापी हो। मैं तुम्हारे हाथ से आरती कभी नही लूँगी।

दादा मैंने क्या झूठ बोली है, रानी बिटिया ? जरा सुनूँ तो सही।

पूपू तुम रोज झूठ बोलते हो, दादा। और बताऊँ, रोज शाम को ही झूठ बोलते हो।

दादा (सोचते हुए) शाम को झूठ—ऐ, (फिर याद करते हुए हँसकर) अच्छा समझा, तुझे कहानी सुनाने की बात न ! वाह रानी बेटी, तू भी बडी चालाक होती जा रही है, क्यो ? पर ठीक, खूब पकडा मुझे। अच्छा देख, पूपू, जरा-सा पाठ कर लूँ। फिर सुनाऊँगा तुझे, आज जरूर कहानी सुनाऊँगा।

पूपू ऊँ-ऊँ, नही दादा, मैं तो आज पहले ही सुनूँगी कहानी। पाठ तुम पीछे करना।

दादा नही बेटी, पाठ का तो यही वक्त है।

पूपू (कुछ रोने के स्वर मे) फिर मम्मी भी तो मुझे सुलाने के लिए बुला लेगी। ऊँ-

ऊँ-ऊँ, मैं तो अभी सुनूँगी, अभी-अभी।

दादा अच्छा भई, आज तेरी ऐसी मर्जी है तो ऐसे ही सही। (रुककर) अच्छा कौन-सी कहानी सुनेगी पूपी ?

पूपू परी देश की। आती है न, दादा, तुम्हे ?

दादा (हसते हुए) अरे, न भी आती होगी तो तेर लिए सीख लूँगा। अच्छा पूपू, तू यहाँ मेरे पास तखत पर आकर बैठ, मैं तुझे आज कहानी सुनाता हूँ।

पूपू अच्छी-सी है न कहानी ?

दादा अच्छी, इतनी अच्छी कि परियो के चक्कर मे तुझे खरगोश, घटाकर्ण, मेढक, सभी के देश मे घुमा दूगा।

पूपू (खुश होकर) अहा हा, तब तो खूब मजा आएगा।

दादा (कहानी शुरू करते ह।) एक समय की बात हे कि एक लडकी सो रही थी। समझ लो वह लडकी तुम्हारी जैसी थी, और उसका नाम भी पूपू था।

पूपू (बीच मे रोककर) ऊँ, तुम तो मुझे

चिढा रहे हो ।

दादा राम-राम, भला तुझे कैसे चिढाऊँगा, बिटिया रानी ! अब तू चुपचाप सुनती रह, नही तो कहानी का मजा चला जायेगा ।

पूपू अच्छा अव मैं बिल्कुल, बिल्कुल नही बोलूगी । ठीक है न, दादा !

[और यह कह कर दादा के तखत पर लेट जाती ह । दादा उसे थपकी देकर सुलाते भी जाते ह।]

दादा हा, तो उम पूपू को परियो के देश मे जाकर, परियो की रानी, झिल-मिल तारे, नीला आकाश, तैरते हुए वादल आदि देखने का बडा शौक था ।

पूपू (हुँकाडा देती है) हूँ ।

दादा एक दिन परियो के देश की याद करते-करते वह सो गई ।

पूपू हूँ फिर क्या हुआ ?

दादा अव तुम आँख मूँद कर लेट जाओ ।

पूपू अच्छा दादा, फिर !

[दादा उसे थपकी देते जाते है ।]

दादा फिर जब वह गहरी नीद मे सो रही थी तो खरगोश आकर उसे जगाने लगे। कहने लगे, चल री पूपू, तुझे हम परी देश ले चले, और —

[दादा के यह कहते ही कहते पूपू सो जाती है। दादा देखते ह कि पूपू सो गई हे तो वहाँ से धीरे से उठकर चले जाते हैं। पीछे से सगीत वजता है। प्रकाश कम हो जाता हे। सगीत और प्रकाश द्वारा यह आभास देना चाहिए कि पूपू अव स्वप्नलोक मे पहुँच गई हे। तभी दो खर-गोशो का प्रवेश होता हे। खरगोशो की पदचाप का सगीत। उनके गले मे घुँघरू वँधे ह, उन घुँघुरुओ की आवाज उनके पदचाप के साथ तेज और धीमी होती जाती है।]

खरगोश-1 (फुसफुसाहट भरे स्वर मे) पूपू-पूपू!
[एक वार मे पूपू नही जागती तो दो-तीन वार जगाते है।]

पूपू (चौंक कर) कौन है?

खरगोश-1 (वैसे ही फुसफुसाहट के स्वर मे) अरे,

हम हे खरगोश। पूपू, तू परियो के देश मे चलेगी ?

पूपू (परियो का नाम सुनते ही सजग होकर आश्चर्य से) क्या, परियो के देश मे ?

खरगोश-2 हाँ, झट से उठ, पूपू। हम तुझे परी-देश की सैर कराने के लिए आए हे।

पूपू पर खरगोश भैया, परियाँ तो कही आसमान मे इतनी दूर रहती ह, वहा कैसे ले चलोगे ?

खरगोश-1 पूपू, हमारे पास एक बडी अच्छी-सी गाडी है। तुम उस पर बैठ जाना और हम दोनो उस गाडी को खीचकर परियो के पास ले चलेगे।

पूपू (आश्चर्य से) सच, खरगोश भैया, तुम्हारे पास गाडी भी हे ?

खरगोश-2 हॉ पूपू, तेरे लिए ही बनाई हे।

पूपू अच्छा, लाओ गाडी, मैं जरूर ही चलूँगी।

[खरगोश-1 गाडी लाने चला जाता है। पूपू खरगोश-2 से पूछती हे।]

पूपू क्यो खरगोश भैया, रास्ते मे पहाड, नदी,

जगल सब कुछ पडेगा ?

खरगोश-2 हाँ, सब पडेगा। पर तुम डरना मत, हम सबको पार करके तुझे ले चलेंगे।
[इतने मे गाडी लेकर खरगोश-1 आ जाता हे।]

पूपू (गाडी देखकर खुशी से) ओहो, यह तो वडी सुदर गाडी हे। अब वडा मजा आएगा। (पूपू गाडी पर बैठ जाती हे, और खरगोश गाडी चलाते ह।) पर सुनो, खरगोश भैया, सुकुमार को मत वताना कि हम कहाँ जा रहे ह ?

खरगोश-2 ऊँहूँ—सुकुमार तो हमे मारता है, उसे कभी नही वताएँगे।
[गाडी टेडी-मेडी चलती ही जाती हे। और दूर पहुँचकर वाहर निकल जाती है। दृश्य परिवर्तन का सगीत। जगल का दृश्य आता है। सामने एक तालाव नजर आता है। मेढक टर्र-टर्र कर रहे हैं। गदन उचका रहे हैं। फिर कूदते-फादते रगमच पर प्रवेश करते है। कुछ देर मेढको का नृत्य होता है, जैसे वह तालाव के किनारे

आनद मना रहे हो। खरगोश उसकी गाडी को खीचते-खीचते वहाँ तालाब के पास आते है। एक मेढक किसी के आने की आवाज सुनता है। वह सब मेढको के पास आकर मुँह पर अँगुली रखकर कहता हे।]

मेढक-1 शिऽ। कोई आ रहा है।
[सब मेढक जिधर से आवाज आ रही है उधर उचक-उचक कर देखते है।]

मेढक-2 खरगोश आ रहे हें।

मेढक-3 अरे, उनके साथ कोई लडकी है।
[तभी खरगोश रगमच पर गाडी खीचते हुए आते है।]

मेढक-1 (डाट कर) ए, खरगोश, कहाँ जा रहे हो ?

मेढक-4 अरे, इस गाडी मे अपनी पूपू दी वैठी हे।
[खरगोश विना रुके आगे वढते जाते हैं।]

मेढक-2 तुम वडे दुप्ट खरगोश हो! रुको, हम अपनी पूपू दी को नही ले जाने देंगे।

खरगोश ईऽ शऽ ! चुप रहो !
हमको तुम मत तग करो
हम जाते ह परी लोक को
पूपू का मन वहलाने को ।
चुप-चुप चुप, चुप रहो ऽ
हमको तुम मत तग करो ।
(यह कह कर खरगोश निकल जाते है, मेढक अपना-सा मुँह लेकर रहे जाते है।)

मेढक-1 पूपू कुछ भी नही वोली ।

मेढक-2 चलो जी, हमे क्या हे, जव पूपू परी देश जाना चाहती हे तो जाने दो ।

मेढक-3 (अकडकर) अगर पूपू दी ने इशारा किया होता, तो मैं, खरगोशो की ऐसी मरम्मत ऐसी मरम्मत करता कि–

मेढक-2 हॉ-हॉ, रहने दो, मान लिया तुम वडे वहादुर हो !

[नेपथ्य से सगीत वजता है और सारे मेढक फुदक-फुदक कर वापिस चले जाते हैं। धीरे-धीरे रोशनी कम होती जाती है, और घने जगल का दृश्य दिखाई पडता है। पीछे से वडे नगाडे की

आवाज के साथ विचित्र शक्लो वाले राक्षस प्रवेश करते हे। इन राक्षसो की सख्या दो से लगाकर आठ तक हो सकती है। इनकी वेशभूपा विचित्र है। न तो डरावने है, न मानवीय। इनका नाम घटाकर्ण ह। इनके कान घटे के समान ह। पूँछ हथौडी के समान। बडे-बडे कदम बढाकर चलते हे। उचित होगा किसी जोरदार भाव-भगिमा के साथ प्रवेश करे। रगमच पर थोडी देर नृत्य करने के वाद इन्हे किसी तरह की आवाज सुनाई पडती है तो ये नृत्य बद करके आवाज आनेवाली दिशा की ओर देखते है।]

घटाकर्ण-1 कौन आ रहा है ?

घटाकर्ण-2 ऐसे घने जगल मे आने की किसकी हिम्मत हुई !

घटाकर्ण-3 जरा देखे। (दूर जाकर देखता है, फिर आकर कहता हे) दो खरगोश गाडी चला रहे ह।

घटाकण-4 ऐ ?

[तब तक घटाकर्ण-3 बाहर देखता ही रहता है ।]

घटाकर्ण-3 (जवाब देते हुए) हाँ-हाँ, गाडी मे पूपू भी बैठी है ।

घटाकर्ण-1 अच्छा, खरगोशो की ऐसी हिम्मत कि पूपू को ले जाएँ ! हम पूपू को उनके साथ कभी नही जाने देगे ।

[वे बाहर जाते हैं । तभी खरगोशो का गाडी लेकर प्रवेश होता है । सगीत द्वारा जगल की हवा, भयानक जानवरो के शोर, आदि का प्रभाव । उसी के बीच से घटाकर्ण की आवाज आती है ।]

घटाकर्ण ठहरो !

खरगोश (दोनो) यह तो राक्षस की आवाज है !

पूपू (घबराकर) अब क्या होगा, यह हमे खा जाएगा ?

खरगोश-1 (मुँह पर अंगुली रखकर) ईSSS श, चुप पूपू । घबरा मत, बस चुपचाप बैठी रह । देख पूपू, हम अपनी चाल तेज करेगे । तू गाडी को ठीक से पकड के बैठ जा ।

[खरगोश अपनी चाल तेज करते ह ।

तभी घटाकर्ण जोरदार विचित्र-सी आवाज मे रगमच के बाहर से बोलता है।]

घटाकर्ण (नेपथ्य से) खरगोश ! कहाँ जा रहे हो ? रुको !

[खरगोश बढते ही जाते है और रगमच के पीछे की ओर चले जाते ह। घटा-कण-1 मच पर आगे आ जाता है।]

घटाकर्ण-1 ऐसी दुष्टता ! रुके नहीं !

खरगोश1 (खरगोश जैसे ऊँचाई पर से बोल रहे हो) तुम कौन हो ?

[सारे घटाकर्णो का रगमच पर प्रवेश। सिर्फ घटाकर्ण-1 ही बात करता है।]

घटाकर्ण-1 नही जानते, हमारा नाम घटाकर्ण है।

पूपू (उचक कर देखते हुए) ये तो बडा अजीव राक्षस है ! रुको न, खरगोश भैया, मैं इससे बात करूँगी।

खरगोश-2 अरे नही, पूपू, यह बडा भयानक है ! वह देखो इसके कान घटे के समान है और पूंछ हथौडी के समान। अपनी पूंछ से कानो के घटे बजा-बजाकर ये बच्चो

को डराते है। लो, वे हमारे पास आ रहे हैं।

घटाकर्ण-1 खबरदार ! आगे मत बढो !

खरगोश-1 ईऽऽऽश, चुप रहो, हमको तग न करो। परीलोक को हम जाते है, पूपू का मन बहलाने। ई ऽ ऽ ऽ श, चुप रहो, हमको तग न करो।

[खरगोश आगे बढते जाते है।]

घटाकर्ण-1 जरा-जरा-से इन खरहो की इतनी हिम्मत ! चलो पकड कर मजा चखाए। [घटाकर्ण अपनी भारी-भरकम चाल द्वारा खरगोशो को पकडने की कोशिश करते हुए रगमच से बाहर चले जाते है। खरगोश पूपू को लेकर दूसरी ओर चले जाते है। धीरे-धीरे अधकार। एक पल मच खाली। फिर पूपू के दादा का प्रवेश। जैसे बहुत ही सोच मे पडे हो। इधर-उधर देखते है। पर जब कही पूपू दिखाई नही पडती, तो असमजस के भाव से कहते है।]

दादा अरे, कहा गई, पूपू बेटी ? सब तरफ

देख आया, कहीं दिखाई ही नहीं पड रही है। (फिर सोचते हुए) कहाँ गई होगी ? कौन ले गया उसे ? अब कैसे पता लगाया जाए ? (चुटकी बजाकर खुश होते हुए) ठीक, सुकुमार के पास चलूँ। वही जानता होगा। अगर नहीं भी जानता होगा तो कहीं न कहीं से पूपू का पता जरूर लगा लाएगा। बडे काम का लडका है। (दादा चले जाते ह। दूसरी ओर से सुकुमार एक हाथ मे लकडी की तलवार और दूसरे हाथ मे छाते का घोटा बनाए, गीत गाता हुआ आता है।)

गीत

मेरा घोडा है मतवाला।
सरपट-सरपट दौड लगाता,
मुन्नू-पप्पू को ले जाता,
नहीं किसी से डरने वाला। मेरा घोडा०॥
उड सकता है आसमान मे,
छू सकता है चाद-सितारा,
करता है यह काम निराला। मेरा घोडा०॥

[दादा का प्रवेश ।]

दादा अरे भई, सुकुमार, सुनना जरा—

सुकुमार नही, दादा, अभी मै घोड़े पर सवार हूँ, अभी कुछ नही सुन सकता ।

दादा अरे भैया, तेरे पास घोडा है, तभी तो आया हूँ तुझसे अपनी बात कहने । देखूँ तेरा घोडा ।

सुकुमार (घोड़े को चलाते-चलाते) मेरा घोडा बहुत बहादुर है, दादा ।

दादा बेटा सुकुमार, सुन तो जरा, तेरी बहिन पूपू है न, वह कही नही मिल रही है ।

सुकुमार तो मैं क्या करूँ ? पर मैं जानता हूँ, दादा, वह पढने के डर के मारे बगीचे मे कही छिप गई होगी ।

दादा नही बेटा, सब जगह ढूँढ लिया, कहीं नही मिली । मुझे तो लगता है । उसे कोई उठाकर ले गया ह, अब तू ही उसे ढूढ-कर ला सकता है ।

सुकुमार (इस बात से खुश होकर बडी शान से) बस मै ही उसे ला सकता हूँ न, दादा ?

दादा हाँ, बिल्कुल ठीक, और किसी मैं तुम्हारे

बराबर हिम्मत ही नही है।

सुकुमार देखो दादा, पूपू हमेशा मुझे डरपोक समझती है। पर मैं बहादुर हूँ न ?

दादा अरे, वाह ! कौन कह सकता है कि तुम वीर नही हो ?

सुकुमार अच्छा, तो ठीक, मै अपने इसी घोडे पर सवार होकर पूपू को ढूँढने जाऊँगा। मेरा घोडा बहुत बहादुर है, दादा।

दादा देखे तुम्हारा घोडा ! (देखकर) भई, खूब है ! हम तो अपने जमाने मे लकडी के डडे को घोडा बनाया करते थे, तुमने छतरी का अपना घोडा बनाया है। यह भी खूब है !

सुकुमार यह छतरी का है न, दादा, इसलिए यह आसमान मे भी उड सकता है। (विजय मिश्रित उमग के साथ) और देखो दादा, इसे रास्ते मे भूख लगेगी न, इसीलिए मैंने इसके खाने के लिए चने के दाने भी रख लिये है। यह देखो ! (सुकुमार छतरी खोल कर दिखाता है तो सारे दाने ज़मीन पर बिखर जाते

है। दाने बिखरने की आवाज ।)

दादा वाह वा ! भई, मान गए ! तुम्हारा घोडा हमारे जमाने से लाख गुना अच्छा है। हमारा घोडा उड नही सकता था, दाना नही खा सकता था। मै मान गया, अब तुम जरूर पूपू को ढूँढकर ला सकते हो।

[सुकुमार चने बीनता है।]

दादा अरे सुकुमार, छोडो दाने को। तुम्हारा घोडा तो इतना बहादुर है कि भूखा भी उड सकता है।

सुकुमार हाँ दादा, ठीक। (कमर मे लगी हुई लकडी की तलवार निकाल कर दादा को दिखाते हुए) देखो दादा, यह तलवार। इस तलवार से बडे-बडे लोग तक डरते है, दादा ! (तलवार निकाल-कर घुमाने लगता है) रास्ते मे कोई मिला तो—

दादा हा, बिल्कुल ठीक, बिल्कुल ठीक कहा, बेटा। अपनी तैयारी करके ही बडे काम के लिए जाना चाहिए।

[सुकुमार चला जाता हे। दादा कुछ गुनगुनाते हुए दाना इकट्ठा करते ह। तभी फिर सुकुमार सिर पर राजकुमार जैसी टोपी पहनकर आ जाता है।]

सुकुमार दादा, मै आ गया। देखो, कैसा लग रहा हूँ?

दादा वाह! अब तो तुम सज-धजकर पूरे राजकुमार लग रहे हो।

सुकुमार अच्छा दादा, तुम घबराना मत। मै झट से पूपू को लेकर वापिस आऊँगा।

दादा शाबाश बेटा! अरे, यही तो आशा थी मुझे।

[घोडे के चलने की टिक-टिक की आवाज। सुकुमार घोडे का गीत गाता हुआ चला जाता हे। धीरे-धीरे आवाज कम होती हे और दादा भी चले जाते ह। कुछ पल मच पर अँधेरा। जब फिर से रोशनी होती हे तो खरगोश पूपू को गाडी मे लेकर प्रवेश करते हैं। यहाँ बाद मे आने वाले परी लोक का दृश्य परिवर्तन करने के लिए बीच मे

एक पर्दा डाला जा सकता है। खरगोश उस पर्दे के सामने से रगमच पर आएँ।]

पूपू खरगोश भैया, परियो का देश और कितनी दूर है ?

खरगोश (दूर अँगुली से दिखाते हुए) वह देखो, पूपू, वडा-सा पेड चमक रहा है न ? वस उसी के पास परियाँ रहती ह।

पूपू यह पेड ऐसा झिलमिल-झिलमिल क्यो कर रहा है ?

खरगोश परियो के देश का पेड है।

पूपू खरगोश भैया, परियो की रानी मेरे जाने से गुस्सा तो नही होगी ?

खरगोश नही, पूपू।

[पूपू खुश हो जाती हे। खरगोश फिर गाडी लेकर वाहर चले जाते है। उनके जाते ही वीच का पर्दा उठ जाता हे और परियो के दरवार का दृश्य दिखाई पडता है। परियो की रानी एक सिंहासन पर वैठी हे। रगमच के एक ओर एक पहरेदार खडा है। परियो की रानी के सामने

अन्य परियाँ नृत्य कर रही हे। नृत्य के बीच मे बाहर से कोई आवाज सुनाई पडती है।]

परी रानी (प्रहरी से) पहरेदार, जाकर देखो, कौन आया है?

[पहरेदार जाकर देखता हे, आकर सूचना देता है।]

पहरेदार धरती से पूपू आई है।

परी रानी अच्छा, उसे बुला लाओ।

[पहरेदार अभिवादन करके चला जाता है और पूपू को सग मे ले आता है। पूपू वहाँ की परियो को, परीलोक के झिलमिल करते हुए दरवार को देखकर आश्चर्य मे पड जाती है। पर तुरन्त सँभलकर परियो की रानी का अभिवादन करती है।]

पूपू नमस्कार, परियो की रानी, नमस्कार।

परी रानी जीती रहो सदा, बेटी। पर तुम यहाँ तक कैसे आई?

पूपू देखो, ये खरगोश भैया मुझे यहाँ तक लाये है।

परी रानी [आश्चर्य से] अच्छा! बडे बहादुर है, ये नन्हे खरगोश! [पहरेदार से] पहरेदार, इन खरगोशो का खूब आदर-सत्कार करो।

[पहरेदार खरगोशो को बाहर ले जाता है। पूपू खुशी से इधर-उधर दौड-दौडकर अन्य परियो को देखती है, रानी का सिहासन देखती है, फिर रानी के इर्द-गिर्द चक्कर लगाती है।]

पूपू (परी रानी के पास आकर बहुत प्यार से) परी रानी, तुम हमारी धरती पर क्यो नही आती?

परी रानी आती हूँ। पर भेष बदलकर जाती हू।

पूपू अच्छा, तभी मम्मी कहती थी, अच्छी बनोगी तो परियाँ आकर तुम्हे इनाम देगी, बुरे काम करोगी तो सजा मिलेगी। क्या यह बात ठीक है, परी रानी?

परी रानी हाँ, बिल्कुल ठीक।

पूपू परीरानी, एक बात बताऊँ? हमारी धरती के सब बच्चे तुम्हे बहुत-बहुत प्यार करते हैं। हम रोज़ परियो की कहानी सुनते

है। मुझे एक गीत भी आता हे।

परी रानो अच्छा, सुनाओ।

[पूपू गीत गाकर नाचती है। सब परियाँ देखती है।]

परी रानी भई वाह, बडा सुन्दर गीत है! (अन्य परियो से) देख लिया न, परियो, धरती के बच्चे हमे कितना प्यार करत हैं। अब तुम भी पूपू को खूब अच्छा सा नाच दिखाकर इसका दिल खुश कर दो।

[परियाँ उठती हे, नाचती है, फिर पूपू भी उनके साथ नाचना शुरू कर देती है। जब नाच काफी तेजी से चल रहा होता है, तभी सुकुमार अपने छतरी के घोडे पर सवार परीलोक मे पहुच जाता है।]

सुकुमार (बडे गुस्से से) रोको, रोको, नाचना, गाना!

[सब आश्चर्य से उसे देखते ह। तभी पूपू सुकुमार को पहचानती है।]

पूपू अरे, सुकुमार भैया! तुम कैसे आए?

सुकुमार (घोडे और तलवार को दिखाते हुए) देखती नही, मेरा उडने वाला घोडा और

यह लकडी की तलवार ! (जोर से) बोलो, कौन लाया है तुम्हे ? मैं अभी उसे मजा चखाता हू ।

परी रानी अरे पूपू, क्या यही वीर सुकुमार है ? इसका तो हमने बडा नाम सुन रखा है। (सुकुमार अकडकर खडा हो जाता है।) आओ सुकुमार, इधर आओ। इतना गुस्सा मत करो, हम अभी तुम्हारी पूपू को तुम्हारे साथ भेज देंगे । (पूपू से) जाओ पूपू, अपने देश, अब सवेरा होने वाला है । [पूपू सुकुमार के घोडे पर बैठ जाती है। सुकुमार वही पुराना घोडे का गीत गाता हुआ रगमच से बाहर हो जाता है। परियाँ हाथ हिलाकर पूपू को विदाई देती ह। सुकुमार के बाहर आते ही रगमच पर अँधेरा हो जाता है। कुछ पल बाद जब प्रकाश होता है तो पूपू पहले दृश्य की भाँति एक चौकी पर सोती दीखती है। एक ओर से सुबह होने की रोशनी पडती है, दूसरी ओर से दादा हाथ मे पूजा की

घटी लिये आते है। पूपू उठकर भौचक्की-सी इधर-उधर देखती है। फिर दादा को देखकर उनकी ओर दौडकर उन्हे पकड लेती है।]

पूपू दादा, दादा!

दादा (सिर पर हाथ फेरकर) क्या है, बिटिया?

पूपू दादा, आज रात को हमारे खरगोश है न, वे मुझे ले गए थे।

दादा ऐं, खरगोश ले गए थे!

पूपू हाँ दादा, मुझे बडी दूर-दूर की सैर कराई। (फिर गुस्से से) पर दादा, देखो यह सुकुमार है न! बडा खराब है! मेरे पीछे परियो के देश मे भी पहुँच गया!

दादा अच्छा! (कहकर आगे बढने लगते है। तभी पूपू उनका हाथ पकडकर कहती है।)

पूपू दादा, रात वाली कहानी बडी अच्छी थी। एक कहानी और सुना दो न।

दादा वह देखो हो गया सवेरा,
काम काज करना वहुतेरा,
आज नहीं कल पूपू रानी,
तुम्हे सुनाऊँ और कहानी ।
[तभी नेपथ्य से पूपू की माँ की आवाज़
आती है ।]

माॅ पूपू, पूपू वेटी, उठो सवेरा हो गया ।

पर्दा गिरता है ।

दीवाली के पटाखे

पात्र

बुढिया (बच्चो की देवी)	माँ	लछमी
दीनू	विनोद	मंजु
अन्य बच्चे	पटाखे	
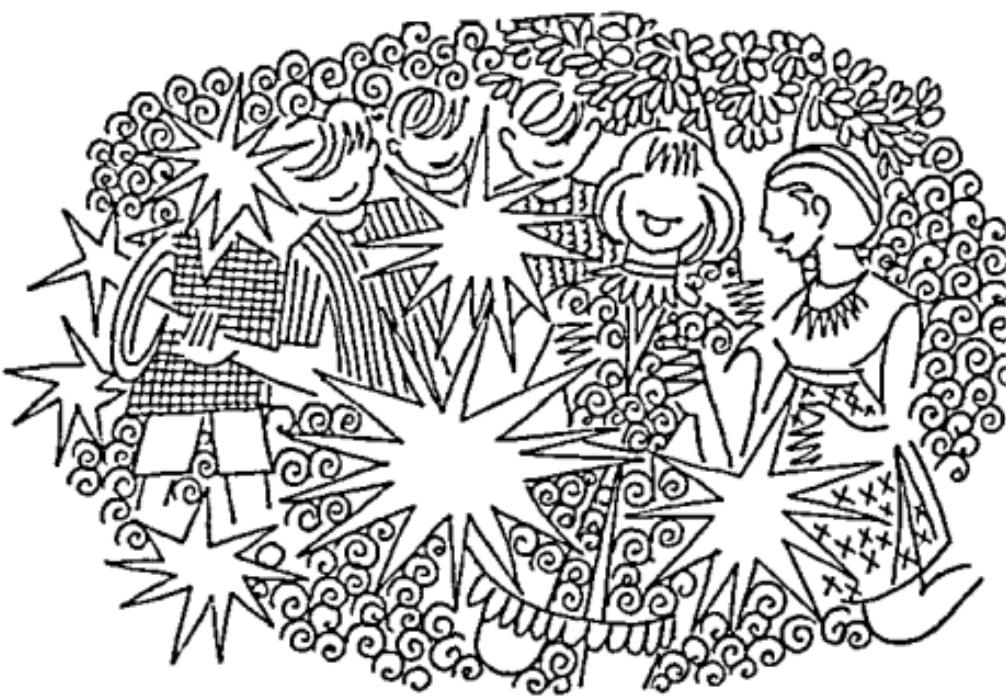
दीवाली के पटाखे

[रगमच के एक ओर एक सेठ के घर का दरवाजा वदनवार तथा फूलमालाओ आदि से सजा हुआ दिखाई पडता है। दूसरी ओर एक घास-फूस की टूटी-सी झोपडी है। झोपडी के पास ही रगमच के बीच मे पीछे की ओर एक बडा-सा पेड है। पेड के चारो ओर चबूतरा-सा बना है। पर्दा खुलते ही कुछ बच्चे सेठ जी के घर की ओर से दीये लेकर आते हैं और पेड के पास रखकर चले जाते हैं। शुरू मे रग-मच पर प्रकाश कम रहता है, फिर धीरे-धीरे प्रकाश तेज होता जाता है, और नेपथ्य से गाने की आवाज सुनाई पडती है। गाने के साथ-साथ सेठ जी के घर से गीत गाती हुई लडकियाँ रगमच पर आती ह और गीत के साथ नृत्य करती हैं।]

गीत

दीवाली का आया त्योहार, नगर मे धूम मची।
घर-घर सजे हैं दुआर, नगर मे धूम मची।

कोई सखी दीया ले आई,
कोई ले आई हार, नगर मे धूम मची।
लड्डू, वर्फी और इमरती,
ले आई भर-भर के थार, नगर मे धूम मची।
जग-मग, जग-मग होए घर-वाहर,
छाई है कैसी वहार, नगर मे धूम मची।
दीवाली का आया त्यौहार, नगर मे धूम मची।

[धीरे-धीरे सव लडकियाँ नृत्य करके रगमच से वाहर चली जाती है। तभी दूसरी ओर से एक लडका दीनू वाहर से एक डलिया मे वेर लेकर भागा-भागा आता है और झोपडी का दरवाजा खटखटाता है।]

दीनू मॉ, मॉ, दरवाजा खोलो। (दरवाजा नही खुलता तो पीटते हुए) माँ, कहाँ गई ? खोलो न दरवाजा !
[मॉ दरवाजा खोलती हे।]

माँ क्या हे, वेटा।

दीनू भूख लगी है, जल्दी से कुछ खाने को दो न।

माँ (प्यार से सिर पर हाथ फेरती हुई)

भूख लगी है ? (पुकारकर) ओगी लछमी, वेटी लछमी !

लछमी क्या है, अम्मा ?

माँ देख, वहाँ टोकरी मे रोटी रक्खी है, जरा ले आ, भैया को भूख लगी है ।

लछमी (रोटी लाकर दिखाते हुए ।) माँ, यह रोटी तो सूख रही है ।

दीनू (रोटी को देखकर हूँ-हूँ करता हुआ) हाँ-हाँ, माँ, यह रोटी तो सूख रही है । सूखी रोटी कैसे खाये ?

लछमी हाँ-हाँ, अम्मा, ऐसी रोटी कैसे खायेंगे !

दीनू (रूठ कर) मैं नही खाऊँगा यह रोटी ! (शिकायत से) वहाँ मजु और विनोद के यहाँ तो ढेर सारी मिठाई वनी है, और तुमने अभी तक रोटी भी नही बनाई ।

माँ (प्यार से सिर पर हाथ फेरते हुए) मजु और विनोद तो वडे आदमी के वच्चे है, वेटा, हमारी उनसे क्या वरा-वरी ! अब तो तुम ये रोटी खा लो । मैं अभी काम पर जाती हूँ, आज मालकिन से खाने भर को जरूर पैसे माँगकर

लाऊँगी। (लडके को समझाते हुए) दीनू बेटे, घर मे रहना और दीदी की बात मानना।

लछमी पर जरा जल्दी से आना, अम्मा, और सग मे खील-बताशे भी ले आना।

दीनू और हाँ, अम्मा, ढेर के ढेर पटाखे जरूर लाना। (माँ दूर को जा रही है तो ज़ोर से) सुनती हो, ना ? पटाखे लाना भूल मत जाना।

माँ अच्छा, बेटा।

[माँ चली जाती है। दोनो बच्चे सूखी रोटी ही तोडकर खाना शुरू करते है कि सेठ जी के दोनो बच्चे एक प्लेट मे मिठाई खाते हुए बाहर आते है और खाते रहते ह। तभी एक भिखारिन बुढिया पीछे मे आती है और उनसे रोटी माँगती है।]

बुढिया बडी भूखी है, बच्चा। कुछ खाने को दे दो।

मजू यहाँ नही है रोटी-ओटी कुछ। (स्वय खाती रहती है।)

बुढिया (दीन-भाव से) दस दिन से एक दाना पेट मे नही गया, बच्चा। कुछ दे दो, भगवान तुम्हारा भला करेगा।

विनोद (झिडक कर) जा, जा, आगे बढ। कह दिया न, यहाँ कुछ नही हे। (फिर पीठ करके मिठाई खाने लगता हे।)

बुढिया अरे, कोई अन्नदाता हे? थोडी रोटी दे दो, बच्चा। बडी भूखी हूँ। दया करके कुछ खाने को दे दो वेटा!

लछमी (बुढिया को अपनी रोटी दिखाते हुए) बुढिया माई, यह रोटी तो बिल्कुल सूखी हे।

दीनू और देखो, हमारी जूठी भी हो गई है।

बुढिया कोई हरज नही हे, वेटा, जैसी है वैसी दे दो, मै खा लूँगी।

लछमी अच्छा, तो लो यह रोटी। मैं अभी पानी लाती हूँ। (यह कहकर लछमी पानी लेने चली जाती हे।)

दीनू माई, मेरे पास कुछ वेर भी है। तुम यही रुकना, मैं अभी लाता हूँ।

[दीनू वेर लेने जाता है, लछमी पानी

लाती है, बुढिया रोटी खाती है। कुछ झोले मे डाल लेती है।

लछमी लो माई, यह पानी पी लो।

दीनू (दौड कर आते हुए और बुढिया के झोले मे बेर डालते हुए) और ये मीठे बेर भी खा लो।

बुढिया (पानी पीकर, बेर लेकर, खुश होकर) जुग-जुग जियो, बच्चो, तुम कितने दयावान हो! ईश्वर तुम्हे सुखी रक्खेगा। तुम्हारी कामना पूरी करेगा।

[बुढिया भिखारिन आशीष देती हुई जाती है। विनोद एक टोकरी मे बहुत सारे पटाखे लेकर खुशी से उछलता हुआ आता है।]

विनोद (टोकरी रगमच पर सामने की ओर रखकर दीनू को बुलाता है।) दीनू-दीनू तू देखेगा, मैं कितने ढेर सारे पटाखे लाया हूँ।

[दीनू और लछमी पटाखे देखकर दौडकर विनोद के पास आ जाते है।]

दीनू देखूं-देखूं। पर यह बताओ, इतने सारे आए कहाँ से ?

विनोद अभी-अभी पापा लाये ह, अभी और भी बहुत सारे पटाखे ह।

दीनू (खुशामद करते हुए) विन्नी भैया, सुनो। हमको भी कुछ पटाखे दे दो न।

विनोद (अकडकर) वाह, अपने पटाखे म तुझको क्यो दूं ?

मजू (वडे उत्साह के साथ भीतर से प्रवेश करके) विन्नी भैया, बिन्नी भैया, जल्दी से आओ, पापा और भी बहुत-से पटाखे लाये हैं।

विनोद (खुशी से) ऐ, पापा और भी पटाखे लाये ह ? (पहले विनोद घर की ओर जाता है, फिर रुककर वडे रौब से दीनू से कहता हे।) ओरे दीनू, देखते रहना, मेरा पटाखा कोई न ले।

दीनू (दीनू पटाखो को वडे गौर से देखता हे, फिर वह विनोद को देखता हे। कही कोई दिखाई नही पडता तो टोकरी मे से पटाखे लेने झुकते हुए) अभी तो यहाँ

कोई नही है, कुछ पटाखे ले लूँ !
[लछमी जैसे ही दीनू को पटाखे उठाते देखती हे, झट से उसका हाथ झिडकती है।]

लछमी नही, नही, दीनू ! यह क्या करते हो ? माँ ने कहा था न ! चोरी करना बुरी बात हे।

दीनू (झेपते हुए) हाँ, कहा तो था। पर हमे पटाखे कौन लायेगा ?

लछमी कह तो दिया है हमने माँ से। वह ले आएगी। चोरी करना पाप होता है।

दीनू हाँ, दीदी। अब मैं ऐसा कभी नही करूँगा। (दुखी मन से विनोद को पुकारते हुए) विनोद भैया, विनोद भैया, अपने पटाखे ले जाओ, हम जा रहे है। (विनोद आकर अपने पटाखे की टोकरी ले जाता हे। दीनू, लछमी अपने घर मे चले जाते है, तभी भिखारिन पेड की आड मे से बाहर मुँह निकालकर कहती है।)

बुढिया देखा, कितने अच्छे बच्चे ह ये, दयालु

भी है और सच्चे भी ।

[भिखारिन फिर पेड के पीछे चली जाती है। बच्चो की माँ बाहर से सिर पर पोटली रख कर आती है। बच्चे माँ को देखकर एकदम उसे पकड लेते हैं और पटाखो के लिए जिद करते है।]

दीनू माँ, पटाखे लाई हो, न ? लाओ, लाओ, जल्दी से दो। जल्दी से दिखाओ, न !

माँ (अपनी ओढनी का पल्ला छुडाते हुए) पहले बेटा, कुछ खा तो लो।

[पर वे दोनो बच्चे उसे छोडते ही नही ।]

दीनू नही, हमे पटाखे लाओ ।

लछमी नही, हमे पटाखे लाओ ।

[दीनू और लछमी 'पटाखे लाओ,' 'पटाखे लाओ' की ऐसी रट लगा लेते हे कि माँ को सिर से पोटली भी उतारने नही देते। इस बात से माँ खीभकर उन्हे पीटते हुए कहती हे ।]

माँ जाओ, जा के मरो कही तुम, मेरे पास नही हैं पटाखे !

[माँ बच्चो को पीटकर घर के भीतर चली जाती है, बच्चे जोर-जोर से रोने लगते ह। तभी बच्चो को रोता हुआ देखकर भिखारिन पेड के पास से बाहर आती है।]

बुढिया (बच्चो से) भोले बच्चो, क्यो रोते हो? अरे, आँखे तो खोलो। बताओ मुझे, इतने दुखी क्यो हो रहे हो तुम?

दीनू (आँखे मलते हुए) हमे पटाखे चाहिए।

बुढिया तुम्हे पटाखे चाहिए?

दीनू हूँ।

बुढिया यह कौन-सी बडी बात है बच्चो? मैं तुम्हे खूब सारे पटाखे दूँगी।

लछमी बुढिया माई, तुम कैसी बात करती हो?

दीनू हाँ, बुढिया माई, तुम्हारे पास खाने भर को तो पैसे नही है, हमे पटाखे कैसे दोगी?

बुढिया सच बात बताऊँ, बच्चो, मैं असल मे बच्चो की देवी हूँ।

दीनू-लछमी (चौककर) क्या कहती हो, बच्चो की देवी!

बुढिया हाँ, हाँ, बुढिया का भेप बनाकर बच्चो के

भले-बुरे काम की रोज परीक्षा लेती हूँ।

दीनू परीक्षा लेती हो ?

बुढिया हाँ, दयालु और अच्छे बच्चो को खूब इनाम देती हूँ। तुमने मुझे रोटी दी थी, अब तुम बताओ क्या चाहिए ?

दीनू हमे खूब सारे पटाखे चाहिए।

बुढिया तुमको, बेटी ?

लछमी मै भी खूब पटाखे लूँगी।

बुढिया अच्छा, तुमको आज मैं ऐसे पटाखे दूँगी जैसे कभी किसी ने देखे नही होगे। खूब बडे-बडे, रग-बिरगे।

दीनू-लछमी (खुशी से एक-दूसरे को देखते हुए) ऐ, खूब बडे और रग-बिरगे !

बुढिया और सुनो, इसमे ऐसा जादू होगा कि एक बार ही नही, बार-बार जब चाहो छुडा सकते हो।

दीनू-लछमी (आश्चर्य से) बार-बार छूट पायेंगे ?

बुढिया हाँ हाँ, बच्चो।

लछमी यह तो बडी अनोखी बात है। जल्दी से दो न, बुढिया माई, ऐसे पटाखे।

बुढिया जरा आँखे बन्द करो। अभी बहुत सारे पटाखे आ जायेंगे।

[बच्चे आँख बन्द करके खडे हो जाते हैं। तभी सगीत के साथ तरह-तरह के पटाखो की वेश-भूषा मे वच्चे आकर रगमच पर जमा हो जाते हे। कुछ समय बाद जब वच्चे आँख खोलते ह तो तरह-तरह के पटाखे देखकर सचमुच अवाक् रह जाते ह। इधर-उधर खुशी मे दौडते है।]

दीनू अहा-हा, इतने सारे पटाखे !

लछमी देखो तो, लम्वे, छोटे, रग-विरगे, तरह-तरह के पटाखे हे !

दीनू कितना मजा आएगा अव ! जव पटाखे छुटाएँगे तो सारा आसमान गूंज उठेगा। है न, दीदी ?

लछमी हाँ हाँ, चलो, मजु और विनोद को भी वुला ले।

दीनू (रुठकर) नही, मै नही वुलाऊँगा उनको। वे दोनो वडे घमडी ह। उन्होने मुझे कोई पटाखा नही दिया, मै क्यो दूं ?

लछमी तो क्या हुआ ? प्यार-प्यार से खेलेगे सवके सग, तो खूब मजा आएगा।

दीनू अच्छा, चलो वुला ले।

लछमी आओ मजु, रानी, रूपो, इधर आ
देखो कितने सारे पटाखे है ।

दीनू विन्नी भैया, राजू, जल्दी आओ,
पास बहुत सारे पटाखे हैं ।
[बच्चे दौड़े दौड़े आते ह, इतने
देखकर चकित रह जाते हैं ।]

सब बच्चे अरे-अरे, ये सब कहाँ से आए ?

दीनू देखो, हमे बच्चो की देवी ने
इनाम मे ।

विनोद (पटाखो को देखते हुए) ये तो बहुत
पटाखे हैं ।

मजु देखो भैया, सब नई तरह के हैं ।
[दीनू और लछमी सब पटाखो के
जाकर उनके नाम बताते जाते ह ।

दीनू देखो ये अनार ।

लछमी ये ह चकरियाँ ।

दीनू (उत्साह से) और इधर भी तो दे
ये बम रहे और ये लडीवाले पटाखे

लक्षमी देख मजू, ये सुदशन-चक्र और फुलझ

मजु सच लछमी, ये तो बहुत अच्छे पटाखे

दीनू चलो, अब छुडाएँ इन सबको ।

विनोद हाँ-हाँ, छुटाएँ। ये अनार तो मैं छुटाऊँ

कान पर अँगुली रखकर दूर खडी हो जाती ह। वम छूटने के वाद लडकियाँ फुलभडियो की ओर आती है।]

लछमी देखो मजु, ये चार रग की फुलभडियाँ। चलो इन्हे छुटाएँ।

[लडके छुटाने के लिए भगडते ह।]

मजु देखो, तुमने वम छुटा लिये, अव फुलभडियाँ हम छुटाएँगे, समभे।

[माचिस जलाने का अभिनय करके मजु फुलभडी छुटाती हे। सव वच्चे फुलभडियो का खूब मजा लेते ह। फिर सुदर्शन-चक्र की ओर वढते हैं।]

विनोद यहाँ आओ। यह सुदर्शन-चक्र कितना वडा हे!

लछमी समभ गई। यह घूम-घूमकर छिटकेगा। क्यो न, दीनू?

दीनू चलो, छुटाकर देखे।

[सुदर्शन-चक्र जलाते ह। उसकी करामात देखकर सव चकित रह जाते ह। इसमे नौ या सात वच्चे होने चाहिए ताकि यह चक्र दो घेरो मे घूम सके और वीच मे चक्र वना बच्चा घूमता रहे।

चक्र का काम समाप्त होने पर सब बच्चे लडीवाले पटाखे की ओर जाते है ।]

दीनू (लडीवाले पटाखे देखकर) अहा जी अहा, अब खूब मजा आएगा !

बीनू क्यो भई क्यो, क्यो आएगा खूब मजा ?

दीनू अरे यार, यह भी नही जानते ? ये लडी-वाले पटाखे है, खूब चट-पट करके इधर-उधर उछलेगे ।

[लडीवाले पटाखो को जला कर बच्चे बहुत खुश होते ह । जिधर वे उछल कर जाते है, उससे दूसरी ओर डर कर भागते है । फिर अत मे जब छिटक-छिटककर सारे पटाखे खतम हो जाते है तो बच्चे खुश होकर इधर-उधर दौडते हुए चिल्लाते ह ।]

सब बच्चे अहा हा, ओ हो हो, सब पटाखे छूट गए !
अहा हा, ओ हो हो, सब पटाखे छूट गए !

[सब बच्चे यह कहते हुए कूद ही रहे है कि दीनू को भिखारिन की वह बात याद आती है तो वह चिल्लाकर लछमी को आवाज देता है ।]

दीनू दीदी-दीदी, इधर तो आओ ।

लछमी क्यो, क्या है, दीनू ?

दीनू दीदी, वुढिया माई ने तो कहा था, ये पटाखे वार-वार छुटा सक्ते है ।

लक्ष्मी हाँ, कहा तो था । पर अव इन्हे फिर से कैसे जलाएँ ?

दीनू चलो, वुढिया माई को ढूंढ लाएँ ।
[तभी नेपथ्य से भन-भन की आवाज सुनाई पडती है, और वच्चे पीछे मुडकर देखते है तो पाते ह, साक्षात् देवी पीछे खडी है ।]

देवी-भिखा० वच्चो ! मैं हाजिर हूँ । अभी तुम्हारे पटाखे ठीक करती हूँ ।
[वह एक छडी लिये है। छडी को जिधर करती है उधर से सारे पटाखे उठकर खडे हो जाते ह । सव पटाखो को फिर से वैसा ही पाकर वच्चे खुश हो जाते ह और फिर उन्हे जलाने मे व्यस्त हो जाते ह । देवी चली जाती हे । सारे पटाखे एक साथ छूटते हे । खूव धूम-धमाका होता है । सव पटाखे अपने-अपने रूप के हिसाव से जलते ह । तभी पर्दा गिरता हे ।]

□□